जुमे का खुतबा

दिनांक: 10 सफ़र 1448 हिजरी, मुताबीक 24 जुलाई 2026 ई.

التَّوَكُّلُ وَالتَّفَاؤُلُ زَمَنَ الْفِتَنِ وَالْقَلَاقِلِ

फितनों और आजमाइशों के दौर में तवक्कुल और उम्मीद

सारी तारीफ़ें उस अल्लाह के लायक हैं जो इबादत और बाक़ी रहने में अकेला है, और जो शुक्र और हम्द-ओ-सना का असली हक़दार है। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा इबादत के लायक नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझीदार नहीं, और वही इज्ज़त और बड़ाई वाला है। और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ उसके बंदे और रसूल हैं, जो पूरी मानव जाति में सबसे उत्तम और सभी नबियों और रसूलों में सबसे पवित्र हैं। अल्लाह तआला की बेशुमार रहमतें नाज़िल हों आप ﷺ पर, आपकी पवित्र संतान पर, आपके नेक और परहेज़गार सहाबा पर, और क़यामत के दिन तक इख्लास और भलाई के साथ उनके पदचिह्नों पर चलने वालों पर।

हम्द और दरूद के बाद: ऐ ईमान वाले भाइयो! अल्लाह का तक़वा इख़्तियार करो और अपने दिलों को अल्लाह के फैसलों पर राज़ी रहने और बदले के दिन के मालिक पर अच्छा गुमान रखने से भर लो। यक़ीन मानो, जिसने अपने रब और आक़ा से उम्मीदें लगा लीं, वह कभी नाकाम नहीं हुआ, और जिसने उसके दरबार में पनाह ले ली, वह कभी हार नहीं सकता। अल्लाह तआला का कथन है:

{وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا إِلَى قَوْمِهِمْ فَجَاءُوهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَانْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِينَ أَجْرَمُوا وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِينَ} [الروم: 47]

"और बेशक हमने आपसे पहले भी रसूलों को उनकी क़ौमों की तरफ भेजा, तो वे उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आए। फिर हमने उन लोगों से बदला लिया जिन्होंने जुर्म किया था, और ईमान वालों की मदद करना हम पर हक़ था।" [अर-रूम: 47]

इस्लामी भाइयो! यह एक सच्चाई है कि ज़िंदगी हमेशा एक जैसी नहीं रहती, इसमें अच्छाई और बुराई, खुशहाली और तंगी के दौर आते रहते हैं। हालात बदलते रहते हैं:

कभी आसानी है तो कभी तंगी, कभी खुशी है तो कभी ग़म। और इस दुनिया की ज़िंदगी में मुसीबतें, दुख-दर्द और आजमाइशें तो आनी ही हैं; जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया:

{وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ وَالثَّمَرَاتِ وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ} [البقرة: 155]

"और हम ज़रूर तुम्हें डर और भूख, और जान-माल और फलों के नुक़सान में से किसी न किसी चीज़ के साथ आज़माएँगे, और सब्र करने वालों को खुशखबरी दे दीजिए।" [सूरह अल-बक़रा: 155]

जब से अल्लाह ने इस दुनिया को पैदा किया है, यह कभी एक हाल पर क़ायम नहीं रहती, बल्कि लोगों को अलग-अलग रास्तों पर पलटती रहती है। जैसा कि किसी शायर ने कहा है:

ثَمَانِيَةٌ تَجْرِي عَلَى النَّاسِ كُلِّهِمْ وَلَا بُدَّ لِلْإِنْسَانِ يَلْقَى الثَّمَانِيَهْ
سُرُورٌ وَحُزْنٌ وَاجْتِمَاعٌ وَفُرْقَةٌ وَيُسْرٌ وَعُسْرٌ ثُمَّ سَقَمٌ وَعَافِيَهْ

"आठ चीज़ें हैं जो सभी लोगों पर गुज़रती हैं, और इंसान के लिए इन आठ का सामना करना ज़रूरी है: खुशी और ग़म, मिलन और जुदाई, आसानी और तंगी, फिर बीमारी और तंदुरुस्ती।"

और यह बात छुपी नहीं है कि आज हम असामान्य हालात और विशेष परिस्थितियों में ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं। जंग एक नापसंदीदा और बुरी चीज़ है, जिसकी तरफ सिर्फ बहुत मजबूरी में ही कदम बढ़ाया जाता है; ताकि दीन, जान और माल की हिफाज़त की जा सके, और इज़्ज़त और वतन को बचाया जा सके। चुनांचे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफा रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस में है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया:

أَيُّهَا النَّاسُ لَا تَتَمَنَّوْا لِقَاءَ الْعَدُوِّ، وَسَلُوا اللَّهَ الْعَافِيَةَ، فَإِذَا لَقِيتُمُوهُمْ فَاصْبِرُوا، وَاعْلَمُوا أَنَّ الْجَنَّةَ تَحْتَ ظِلَالِ السُّيُوفِ» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ]

"ऐ लोगो! दुश्मन से आमना-सामना होने की तमन्ना न करो, और अल्लाह से आफियत (सुरक्षा/कुशलता) माँगो, लेकिन जब तुम्हारा उनसे सामना हो जाए तो साबित-क़दम रहो, और जान लो कि जन्नत तलवारों के साये के नीचे है।" [बुसही खारी, सही मुस्लिम]

इन हालात में इंसान इस बात से सुरक्षित नहीं रह सकता कि उसके अंदर कुछ मायूसी (निराशा) आ जाए। वह मायूसी जो इरादों को कमज़ोर कर देती है, मर्दों को हरा देती है, एहसासों को झकझोर देती है और उम्मीदों को चकनाचूर कर देती है। इन बोझों को दूर करने के लिए हमें उम्मीद की कितनी सख्त ज़रूरत है!

इस्लामी भाइयो! बेशक जो इंसान नबी करीम ﷺ की पवित्र जीवनी और मार्गदर्शन पर गौर करता है, वह देखता है कि आप ﷺ उम्मीद दिलाने के कितने इच्छुक थे। आप ﷺ डर के मौके पर खुशखबरी सुनाते थे, और मायूसी व निराशा की जगह उम्मीद का दामन फैलाते थे; ताकि दिल मायूसी और उदासी का शिकार न हों। सही बुखारी की रिवायत है, हज़रत खब्बाब बिन अरत रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि उन्होंने फरमाया: "मैं नबी करीम ﷺ की सेवा में हाज़िर हुआ, उस वक़्त आप काबा के साये में अपनी चादर का तकिया बनाए लेटे हुए थे। और हम मुशरिकों (बहुदेववादियों) की तरफ से सख्त तकलीफें उठा रहे थे। मैंने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! क्या आप हमारे लिए अल्लाह से दुआ नहीं करते?! आप ﷺ उठ बैठे और आपका चेहरा मुबारक लाल हो गया। आप ﷺ ने कहा:

لَقَدْ كَانَ مَنْ قَبْلَكُمْ لَيُمْشَطُ بِمِشْطِ الْحَدِيدِ مَا دُونَ عِظَامِهِ مِنْ لَحْمٍ أَوْ عَصَبٍ؛ مَا يَصْرِفُهُ ذَلِكَ عَنْ دِينِهِ، وَيُوضَعُ الْمِنْشَارُ عَلَى مَفْرِقِ رَأْسِهِ فَيُشَقُّ بِاثْنَيْنِ؛ مَا يَصْرِفُهُ ذَلِكَ عَنْ دِينِهِ، وَلَيُتِمَّنَّ اللَّهُ هَذَا الْأَمْرَ حَتَّى يَسِيرَ الرَّاكِبُ مِنْ صَنْعَاءَ إِلَى حَضْرَمَوْتَ؛ مَا يَخَافُ إِلَّا اللَّهَ وَالذِّئْبَ عَلَى غَنَمِه

"तुमसे पहले के लोगों में से किसी को लाया जाता, और लोहे की कंघियों से उसके गोश्त और पट्ठों को हड्डियों से नोंच लिया जाता था, मगर यह ज़ुल्म भी उसे उसके दीन से नहीं फेर सकता था। और किसी के सिर के बीच में आरा रखकर उसे चीर कर दो हिस्सों में बाँट दिया जाता था, मगर यह तकलीफ भी उसे उसके दीन से नहीं हटा सकती

थी। अल्लाह इस दीन को ज़रूर पूरा करेगा (कमाल तक पहुँचाएगा), यहाँ तक कि एक सवार सनआ से हज़रमौत तक का सफर करेगा और उसे अल्लाह के सिवा किसी का डर न होगा, या सिर्फ भेड़िये का डर होगा कि कहीं उसकी बकरियों को न खा जाए।"

और यह हमारे प्यारे नबी ﷺ हैं जो मुश्किलों के ज़माने में हज़रत अदी बिन हातिम रज़ियल्लाहु अन्हु को उनके इस्लाम लाने से पहले, इस दीन के शानदार भविष्य की खुशखबरी दे रहे हैं। चुनांचे नबी करीम ﷺ ने कहा:

أَمَا إِنِّي أَعْلَمُ مَا الَّذِي يَمْنَعُكَ مِنَ الْإِسْلَامِ، تَقُولُ: إِنَّمَا اتَّبَعَهُ ضَعَفَةُ النَّاسِ وَمَن لَّا قُوَّةَ لَهُ؛ وَقَدْ رَمَتْهُمُ الْعَرَبُ، أَتَعْرِفُ الْحِيرَةَ؟

"सुनो! मैं जानता हूँ कि कौन सी चीज़ तुम्हें इस्लाम क़बूल करने से रोक रही है। तुम सोचते हो कि इस दीन की पालन तो सिर्फ कमज़ोर और बेबस लोगों ने की है, और अरबों ने उन्हें निशाना बना रखा है। क्या तुम हीरा (शहर) को जानते हो?" मैंने अर्ज़ किया: मैंने उसे देखा तो नहीं, परन्तु उसका नाम सुना है। आप ﷺ ने फरमाया:

فَوَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ؛ لَيُتِمَّنَّ اللَّهُ هَذَا الْأَمْرَ حَتَّى تَخْرُجَ الظَّعِينَةُ مِنَ الْحِيرَةِ حَتَّى تَطُوفَ بِالْبَيْتِ فِي غَيْرِ جِوَارِ أَحَدٍ، وَلَيُفْتَحَنَّ كُنُوزُ كِسْرَى بْنِ هُرْمُزَ

"उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! अल्लाह इस काम (दीन) को ज़रूर मुकम्मल फरमाएगा, यहाँ तक कि एक अकेली औरत हीरा से सफर करके आएगी और किसी की पनाह के बिना काबा का तवाफ़ करेगी। और किसरा बिन हुरमुज़ के खज़ाने ज़रूर फतह किए जाएँगे।" मैंने हैरानी से पूछा: किसरा बिन हुरमुज़ के (खज़ाने)?! आप ﷺ ने फरमाया:

نَعَمْ؛ كِسْرَى بْنُ هُرْمُزَ، وَلَيُبْذَلَنَّ الْمَالُ؛ حَتَّى لَا يَقْبَلَهُ أَحَدٌ

"हाँ! किसरा बिन हुरमुज़ के, और माल इस कदर बाँटा जाएगा कि कोई उसे क़बूल करने वाला न मिलेगा।"

हज़रत अदी बिन हातिम रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं: (फिर ऐसा ही हुआ कि) वह औरत हीरा से निकलती है और किसी की पनाह के बिना बैतुल्लाह का तवाफ़ करती है, और मैं खुद उन लोगों में शामिल था जिन्होंने किसरा बिन हुरमुज़ के खज़ाने फतह

किए। और उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! तीसरी बात भी ज़रूर पूरी होकर रहेगी, क्योंकि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इसकी भविष्यवाणी फरमाई है। [इस हदीस को इमाम अहमद ने रिवायत किया और शैख़ शुएब अल-अरनउत ने इसे सही क़रार दिया है]। ऐ अल्लाह के बंदो! बड़े और हिला देने वाले हालात में, जब मुसीबत बहुत बढ़ जाती है, और हालत वैसी हो जाती है जैसी खंदक के युद्ध के मौके पर अल्लाह तआला ने अपने मोमिन बंदों की बयान की है:

{إِذْ جَاءُوكُمْ مِنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ أَسْفَلَ مِنْكُمْ وَإِذْ زَاغَتِ الْأَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّونَ بِاللَّهِ الظُّنُونَا (10) هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُونَ وَزُلْزِلُوا زِلْزَالًا شَدِيدًا} [الأحزاب: 10، 11]

"जब वे तुम्हारे पास तुम्हारे ऊपर से और तुम्हारे नीचे से आ गए, और जब आँखें पथरा गईं और दिल हलक़ तक आ गए, और तुम अल्लाह के बारे में तरह-तरह के गुमान करने लगे। उस वक़्त मोमिनों को आज़माया गया और वे बड़ी सख्ती से झकझोरे गए।" [सूरह अल-अहज़ाब: 10, 11]

इन सख्त हालात में भी नबी करीम ﷺ ने ग़ैब का इल्म रखने वाले अल्लाह पर भरोसा किया, जंग की ज़ाहिरी तैयारी की, और इसके साथ-साथ अपने सहाबा के दिलों में उम्मीद और हौसला पैदा किया। सच्चे मुसलमानों का यही तरीक़ा होता है, वे दुख को खुशखबरी में, मायूसी को उम्मीद में, तंगी को आसानी में और मुश्किलों को अल्लाह के इनाम में बदल देते हैं। इसी सकारात्मक सोच की वजह से, तमाम सख्तियों और परेशानियों के बावजूद ज़िंदगी खूबसूरत लगने लगती है! अल्लाह तआला का आदेश है:

{وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ إِلَّا بِاللَّهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِي ضَيْقٍ مِمَّا يَمْكُرُونَ} [النحل: 127]

"और सब्र कीजिए और आपका सब्र अल्लाह ही की तौफीक से है। और उन (मना करने वालों) पर ग़म न करें, और उनकी मक्कारी भरी चालों से तंगी महसूस न करें।" [सूरह अन-नहल: 127]

अल्लाह तआला मेरे और आपके लिए पवित्र क़ुरआन में बरकत अता फरमाए, और मुझे और आपको इसकी आयतों और हिकमत भरी नसीहतों से फायदा पहुँचाए। मैं अपनी यह बात कहता हूँ और अपने और आप सबके लिए अल्लाह तआला से माफ़ी माँगता हूँ, अतः आप भी उससे माफ़ी माँगें, बेशक वह बड़ा माफ़ करने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

दूसरा खुतबा

सारी तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, और मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा इबादत के लायक़ नहीं, वह अपनी बुलंदियों में सबसे महान और सर्वोच्च है। और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके बंदे और उसके चुने हुए रसूल हैं। अल्लाह की रहमतें और सलामती हो उन पर, उनके परिवार पर, उनके सहाबा पर और उनसे मुहब्बत और श्रद्धा रखने वालों पर।

ऐ अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरो और उन कामों के ज़रिए उसकी निकटता हासिल करो जिन्हें वह पसंद करता है और जिनसे वह राज़ी होता है। अल्लाह के नज़दीक उसकी आज्ञापालन करने और उसके बंदों के साथ भलाई और एहसान करने से ज़्यादा कोई चीज़ प्रिय नहीं। और अल्लाह तआला इन दोनों बातों पर क़ायम रहने वाले को कभी अकेला और अपमानित नहीं छोड़ेगा; अल्लाह तआला ने कहा:

{وَلَيَنْصُرَنَّ اللَّهُ مَنْ يَنْصُرُهُ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ (40) الَّذِينَ إِنْ مَكَّنَّاهُمْ فِي الْأَرْضِ أَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ وَأَمَرُوا بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ وَلِلَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ} [الحج: 40، 41]

"और अल्लाह ज़रूर उसकी मदद करेगा जो उस (के दीन) की मदद करेगा। बेशक अल्लाह बड़ी ताक़त वाला, ज़बरदस्त है। (ये वे लोग हैं) कि अगर हम उन्हें ज़मीन में सत्ता दें तो वे नमाज़ क़ायम करेंगे, ज़कात अदा करेंगे, नेकी का हुक्म देंगे और बुराई से रोकेंगे। और तमाम कामों का अंजाम अल्लाह ही के अधिकार में है।" [सूरह अल-हज्ज: 40, 41]

और हज़रत अबू दरदा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, उन्होंने फरमाया: मैंने अल्लाह के रसूल ﷺ को फरमाते हुए सुना:

ابْغُونِي ضُعَفَاءَكُمْ؛ فَإِنَّكُمْ إِنَّمَا تُرْزَقُونَ وَتُنْصَرُونَ بِضُعَفَائِكُمْ

"अपने कमज़ोरों का खयाल रखो; क्योंकि तुम्हें तुम्हारे कमज़ोरों ही के कारण रोज़ी दी जाती है और तुम्हारी मदद की जाती है।" [इस हदीस को इमाम अहमद ने रिवायत किया है और शैख़ शुएब अल-अरनउत ने इसे सही क़रार दिया है] ।

मेरे दीनी भाइयो! उम्मत के हालात के बारे में निराशा से भरी बातचीत मुसलमानों की हिम्मत तोड़ती है और उन्हें दुख और नाकामी में फँसा देती है। अतः कमज़ोरी और कायरता के शब्द दोहराने या निराशा फैलाने से बचें। अल्लाह के साथ बुरा गुमान न रखें, और खबरदार! उन लोगों की तरह न हो जाएँ जिनकी अल्लाह तआला ने निंदा की और कहा:

{بَلْ ظَنَنْتُمْ أَنْ لَنْ يَنْقَلِبَ الرَّسُولُ وَالْمُؤْمِنُونَ إِلَى أَهْلِيهِمْ أَبَدًا وَزُيِّنَ ذَلِكَ فِي قُلُوبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ وَكُنْتُمْ قَوْمًا بُورًا} [الفتح: 12]

"बल्कि तुमने तो यह गुमान कर लिया था कि रसूल और मोमिन अपने घर वालों की तरफ कभी लौट कर नहीं आएँगे, और यही बात तुम्हारे दिलों में अच्छी बना दी गई थी, और तुमने बहुत बुरा गुमान किया, और तुम बर्बाद होने वाले लोग थे।" [सूरह अल-फतह: 12] (शब्द "बूरन" (بُورًا): 'बाइर' का बहुवचन है, जिसका मतलब है हलाक होने वाला, मायूस और हारा हुआ इंसान।)

और सही मुस्लिम की रिवायत है, हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फरमाया:

إِذَا قَالَ الرَّجُلُ: هَلَكَ النَّاسُ؛ فَهُوَ أَهْلَكُهُمْ

"जब कोई व्यक्ति यह कहे कि लोग हलाक व बर्बाद हो गए, तो वह उनमें सबसे ज़्यादा हलाक व बर्बाद होने वाला है।" (दूसरी रिवायत में: « فهو أهلَكَهُم » है, यानी उसने उन्हें हलाक और बर्बाद कर दिया।)

ऐ अल्लाह! ईमान को हमारे लिए महबूब बना दे और इसे हमारे दिलों में सजा दे, और कुफ्र, नाफरमानी और गुनाह को हमारे लिए नापसंदीदा बना दे, और हमें हिदायत पाने वाले लोगों में शामिल फरमा। ऐ अल्लाह! इस्लाम और मुसलमानों को ग़लबा और इज़्ज़त अता फरमा, और शिर्क और मुशरिकों को ज़लील और अपमानित कर। ऐ अल्लाह! तमाम मुसलमान मर्दों और औरतों, और मोमिन मर्दों और औरतों को माफ़ फरमा, उनमें से जो ज़िंदा हैं और जो गुज़र चुके हैं सबको माफ़ कर दे।

ऐ अल्लाह! कुवैत और इसके निवासियों को हर बुराई और नापसंदीदा बात से महफूज़ रख, और इस देश को और तमाम इस्लामी देशों को अमन और शांति का केंद्र बना दे।

ऐ अल्लाह! सीमाओं के रक्षक हमारे भाइयों, सिक्योरिटी फोर्स, रक्षा संस्थानों, नेशनल गार्ड्स, फायर ब्रिगेड और देश की शांति व्यवस्था पर तैनात सभी कर्मचारियों की हिफाज़त फरमा, और उन्हें साबित-क़दमी (दृढ़ता) अता फरमा।

ऐ अल्लाह! हमारे अमीर और उनके वली अहद (उत्तराधिकारी) को उन कामों की तौफीक दे जिन्हें तू पसंद करता है और जिनसे तू राज़ी होता है, और नेकी और तक़वा के लिए उनका मार्गदर्शन फरमा। और हमारी आख़िरी पुकार यही है कि तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम दुनियाओं का पालने वाला है।

जुमे का खुतबा तैयार करने वाली कमेटी